सुभाषित *जो तुम्हें बुराईसे बचाता है, नेक राहपर चलाता है और जो मुसीबतके समय तुम्हारा साथ देता है, बस वही मित्र है।* ❐ *हितोपदेश*

बड़े आन्दोलनकी आहट

जन-सरोकारसे जुड़े मुद्दोंको लेकर फ्रांसमें विगत शनिवारको देशव्यापी स्तरपर हुई हिंसा, विरोध और प्रदर्शनोंसे भारी तबाहीने बड़ा सन्देश दिया है। लगभग दस लाख लोगोंका सड़कोंपर उतरना और कई स्थानोंपर शान्तिपूर्ण प्रदर्शन, हिंसा, आगजनी, तोड़फोड़ और लूटपाटकी घटनाएं सरकारके लिए चिन्ता बढ़ाने वाली है। फ्रांसके ऐतिहासिक लिमोज शहरके सिटी हालमें आगजनी और दुकानों तथा सार्वजनिक सम्पत्तियोंकी क्षतिसे एक गम्भीर प्रश्न यह भी सामने आया है कि क्या फ्रांस एक और 'येलो वेस्ट' जैसी लम्बी सामाजिक उथल-पुथलकी ओर बढ़ रहा है? फ्रांसमें आन्दोलनकी शुरुआत स्कूलोंकी खराब स्थिति, शिक्षकोंकी कमी और शिक्षा व्यवस्थासे असन्तोषसे हुई। बादमें महंगी, ईंधनकी बढ़ती कीमत, वेतन, पेंशन और सरकारी खर्चमें कटौती जैसे मुद्दे भी इसमें शामिल हो गये। ट्रेड यूनियनों, छात्रों और अन्य सामाजिक समूहोंके शामिल होनेसे आन्दोलन व्यापक हो गया। इस आन्दोलनको केवल फ्रांसका आन्दोलन मानना उचित नहीं होगा। फ्रांससे लेकर बेल्जियम, इटली, पुर्तगाल, स्पेन, ग्रीस, अमेरिका, बोलीविया, अर्जेंटीना, आस्ट्रेलिया, अल्बीनिया जैसे देशोंमें अलग-अलग कारणोंसे हो रहे प्रदर्शनोंमें एक साझा आर्थिक-सामाजिक असन्तोष दिखायी दे रहा है। एक बड़ा सवाल यह भी उठता है यूरोपमें बढ़ता जनाक्रोश बड़े सामाजिक आन्दोलनकी आहट तो नहीं है? इन सभी देशोंमें विरोध प्रदर्शनके कारण भले ही अलग-अलग हों। लेकिन बेचैनी एक जैसी है। बेल्जियममें आर्थिक दबाव और सार्वजनिक सेवाओंको लेकर असन्तोष है। इटलीमें जीवनयापनकी बढ़ती लागत और शिक्षा सम्बन्धी मुद्दे हैं। पुर्तगालमें आवास और बढ़ते किरायेकी समस्या है। स्पेनमें मकानोंका महंगा होना और किरायेके संकटका बढ़ना। अल्बानियामें भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शिक्षाकी खराब स्थिति और सरकारके खिलाफ असन्तोषका मामला है। अमेरिकामें राष्ट्रपति ट्रम्पके विरोधमें प्रदर्शन हो रहे हैं। अर्जेंटीनामें कठोर आर्थिक नीतियां और आस्ट्रेलियामें महंगीको लेकर जनाक्रोश है। इन सभी देशोंमें मुद्दे अलग है, लेकिन शिकायतका मूल स्वर समान है। सरकारें आम नागरिकोंकी आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयोंको पर्याप्त महत्व नहीं दे रही है। इन आन्दोलनोंका एक महत्वपूर्ण पहलू युवाओंकी सक्रिय भागीदारी है। युवा वर्गको रोजगार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, महंगे आवास और भविष्यकी आर्थिक सुरक्षाको लेकर चिन्ता है। लेकिन इससे बड़ी चिन्ता आन्दोलनका हिंसक होना है। ऐसे आन्दोलन भारतके लिए क्या संकेत देते हैं, इसपर भी ध्यान देना होगा। यूरोप भारतका सबसे बड़ा व्यापारिक और निवेश साझेदार है। यदि आन्दोलन लम्बे समयतक चला तो इससे भारत भी प्रभावित हो सकता है। यूरोपमें राजनीतिक अस्थिरताका प्रभाव वैश्विक बाजार, तेलकी कीमतोंपर भी पड़ सकता है। भारतको सजग रहनेकी जरूरत है।

खाद्य पदार्थोंकी निगरानी

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने खाद्य पदार्थोंकी निगरानीके लिए जो सख्त और नये नियम जारी किये हैं, वह लोगोंकी सेहतकी सुरक्षाकी दिशामें सार्थक और बड़ा कदम है। इसके लिए जहां सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशोंके सम्बन्धित अधिकारियोंको जांच और विशेष सतर्कता बरतनेका निर्देश दिया गया है, वहीं कारोबारियोंको सचेत किया गया है कि पूरी आपूर्ति चेनमें निर्धारित तापमान और सुरक्षाके पालनमें पूरी सतर्कता बरतें। सुरक्षा मानकोंका उल्लंघन अक्षम्य अपराध माना जायगा और कड़ी काररवाइ की जायगी। त्योहारी सीजनमें खाद्य पदार्थोंकी बढ़ती मांगके बीच मिलावटी, नकली और कई दिन पूर्व तैयार किये गये खाद्य पदार्थोंके भण्डारणसे इनकार नहीं किया जा सकता है। कारोबारियोंका इन खाद्य पदार्थोंको भण्डारण और ढुलाईसे लेकर ग्राहकोंतक पहुंचानेकी पूरी प्रक्रियामें निर्धारित तापमान बनाये रखनेका निर्देश महत्वपूर्ण है। खोवा, पनीर, मांस, मछली और इसी तरहके अन्य जल्द खराब होने वाले कई खाद्य पदार्थोंको उचित तापमानपर नहीं रखा जाता जिससे इनके खराब होनेका खतरा बढ़ जाता है। यह सार्वजनिक रूपसे स्वास्थ्यके लिए हानिकारक है। इसी तरह खाने-पीनेके चीजों गैर-खाद्य रंगोंके इस्तेमालपर पूर्ण प्रतिबन्ध भी महत्वपूर्ण है। कच्चे दूध, सादे दही, ताजे फलों, कच्ची सब्जियों और शिशु आहारमें रंग मिलाना पूरी तरह प्रतिबन्धित कर दिया गया है। एफएसएसआईका बाजारोंमें बिकने वाले मिलावटी, नकली और जन-स्वास्थ्यके लिए हानिकारक, बीमारियोंको दावत देने वाले खाद्य पदार्थोंके बिक्रीपर प्रतिबन्ध लोगोंके स्वास्थ्यकी सुरक्षा सुनिश्चित करनेकी दिशामें उपयोगी पहल है लेकिन इसका अनुपालन सुनिश्चित किया जाना, इससे भी ज्यादा जरूरी है। इसके पहले भी केन्द्र सरकारने स्वास्थ्यको प्रभावित करने वाले खाद्य पदार्थोंपर अंकुश लगानेके लिए नियमोंमें बदलाव और कड़े निर्देश जारी किये हैं फिर भी स्थिति यथावत है। इसके लिए प्रशासनिक तंत्र जिम्मेदार है। इनकी नकेल कसना जरूरी है, ताकि इन्हें अपना कर्तव्यबोध हो सके, तभी मिलावटी एवं नकली खाद्य पदार्थोंकी बिक्री रोकी जा सकती है।

लोक संवाद

परम्पराकी तिलांजलि

महोदय,-पहले किसी किसी भी आयोजन-प्रयोजनमें भारतीय संस्कृतिमें मिट्टीके दीये जलानेकी परम्परा रही है। परन्तु अब तो दीपावलीमें भी लोग इस परम्पराका निर्वहन नहीं करते हैं। मिट्टीके दीयोंकी सौंधी महक, घरमें बनते पकवानोंकी मिठास, आंगनके मांडणों, रिश्तोंके अपनत्व और लोक-परम्पराओंकी जीवंतताका पर्व हुआ करती थी। आज बिजलीकी रंग-बिरंगी लडियां हैं, महंगे उपहार हैं, मिठाइयोंके आकर्षक डिब्बे हैं, पटाखोंका शोर है और इंटरनेटपर शुभकामनाओंकी भरमार है। सब कुछ है, लेकिन क्या वह पहले जैसा उल्लास, वह आत्मीयता और वह सुकून भी है। आधुनिकताकी चकाचौंधमें कहीं हम दिवालीकी आत्मा तो नहीं खोते जा रहे हैं। दिवाली केवल अमावस्याकी रातको रौशन करनेका पर्व नहीं है। यह अंधकारपर प्रकाश, निराशापर आशा और दूरीपर अपनत्वकी विजयका प्रतीक है। यह वह अवसर है जब घरोंके साथ रिश्तोंकी भी सफाई होती थी, मनके मैल दूर किये जाते थे और रूठोंको मनाया जाता था। **-सुनील प्रजापति, वाया ईमेल।**

शौर्य और नवसंकल्पका महापर्व

भारतीय संस्कृतिकी सबसे बड़ी विशेषता है कि उसने जीवनके उत्सवोंको आनन्द और उल्लासके साथ आत्मचिंतन, साधना और जीवन-परिवर्तनका माध्यम बनाया है। प्रत्येक पर्व शाश्वत संदेश समेटे हुए है। विजयादशमी ऐसा ही प्रेरणाप्रद पर्व है, जो आध्यात्मिक परम्पराओं और जीवन-दर्शनसे जुड़कर सत्य और विजयकी राह दिखाता है।

❐ ललित

दशहरा पर्व हमें स्मरण कराता है कि जीवनकी वास्तविक विजय दूसरोंको पराजित करनेमें नहीं, बल्कि अपने भीतर विद्यमान दुर्बलताओं, विकारों और नकारात्मक प्रवृत्तियोंपर विजय प्राप्त करनेमें है। असत्यपर सत्य, अंधकारपर प्रकाश, निराशापर आशा और अधर्मपर धर्मकी विजयका यह उत्सव भारतीय जनमानसमें सदियोंसे नयी ऊर्जा, नया विश्वास और नया संकल्प भरता आया है। दशहरेकी सांस्कृतिक चेतनाका सबसे प्रभावशाली आधार भगवान श्रीरामकी रावणपर विजय है। रामायणका यह प्रसंग केवल एक ऐतिहासिक अथवा पौराणिक युद्धकी परिणति नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और अहंकारके बीच संघर्षका शाश्वत आख्यान है। श्रीराम मर्यादा, करुणा, सत्य, कर्तव्य और धर्मनिष्ठाके प्रतीक हैं, जबकि रावण ज्ञान, सामर्थ्य और वैभवसे संपन्न होनेके बावजूद अहंकार, अनियंत्रित इच्छाओं और अनैतिक आचरणका प्रतीक बन जाता है। रावणका व्यक्तित्व इस सत्यको उजागर करता है कि ज्ञान यदि विवेकसे, शक्ति यदि मर्यादासे और समृद्धि यदि नैतिकतासे विमुख हो जाय तो मनुष्यके पतनका कारण बन जाती है। श्रीरामकी विजय इसलिए महत्वपूर्ण है कि उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियोंमें भी अपने आदर्शोंका परित्याग नहीं किया। दशहरा हमें सिखाता है कि परिस्थितियां कितनी ही कठिन क्यों न हों, सत्य और धर्मके मार्गपर चलने वाला व्यक्ति अंतत: समाजकी आस्था और इतिहासकी प्रेरणा बनता है।

दशहरा हमें भीतरके प्रकाशका दीप जलाने, निराशाओंके बीच आशा, कठिनाइयोंमें साहस बनाये रखने और जीवनको नवसृजनकी दिशा देनेका सन्देश देता है। इस विजयादशमीपर हम अपने भीतरके अहंकार, स्वार्थ और दुर्बलताओंको समाप्त कर सत्यको आधार, करुणाको स्वभाव और कर्मको अपनी साधना बनायें। यही भारतीय संस्कृतिकी आध्यात्मिक विरासतका सम्मान है। यही उत्सवकी सार्थकता और विजय है, जो व्यक्तिके जीवनको प्रकाशित करते हुए परिवार, समाज और राष्ट्रमें नयी चेतनाका संचार कर सकती है। क्योंकि सच्चा दशहरा तभी है, जब रावणका दहन मैदानमें ही नहीं, मनमें भी हो।

भारतीय संस्कृतिमें दशहरेका संबंध केवल रामकी विजयसे नहीं, बल्कि मां दुर्गाकी महिषासुरपर विजयसे भी जुड़ा है। नवरात्रके नौ दिनोंमें शक्तिकी आराधना और दसवें दिन विजयादशमीका उत्सव इस बातका प्रतीक है कि साधनाके बाद सिद्धि, संघर्षके बाद सफलता और आत्मबलके जागरणके बाद विजयका मार्ग प्रशस्त होता है। मां दुर्गाकी उपासना हमें यह संदेश देती है कि जीवनकी चुनौतियोंका सामना करनेके लिए शक्ति और संवेदना, साहस और विवेक तथा पराक्रम और करुणाका समन्वय आवश्यक है। भारतीय आध्यात्मिक परम्परामें शक्तिका अर्थ केवल बाहुबल अथवा प्रभुत्व नहीं है, बल्कि आत्मबल, इच्छाशक्ति, धैर्य, आत्मसंयम और अन्यायके विरुद्ध खड़े होनेकी नैतिक क्षमता भी है। इसीलिए दशहरा शक्तिकी साधनाके साथ-साथ उस शक्तिके सदुपयोगका भी पर्व है।

दशहरा पर्वका आध्यात्मिक पक्ष अत्यंत गहरा है। बाहरी रावणका दहन तभी सार्थक है, जब मनुष्य अपने भीतर बैठे रावणको पहचानने और परास्त करनेका साहस जुटाये। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी जैसी प्रवृत्तियां मनुष्यके व्यक्तित्वको भीतरसे दुर्बल बनाती हैं। रावणके दस सिरोंको इन दस विकारोंके प्रतीकके रूपमें भी देखा जा सकता है। प्रतिवर्ष रावणके पुतले जलते हैं, आतिशबाजी होती है और उत्सव संपन्न हो जाता है, लेकिन यदि हमारे भीतर ईर्ष्या, छल, स्वार्थ, द्वेष और अहंकार जीवित रहें तो विजयादशमीका मूल उद्देश्य अधूरा रह जाता है। सच्चा दशहरा वह है, जब हम किसीके प्रति अपने मनमें पल रहे द्वेषको समाप्त करें, अपने व्यवहारसे छलको निकालें, अपने अधिकारोंके साथ कर्तव्योंको स्वीकारें और अपनी सफलतामें दूसरोंके योगदानको भी सम्मान दें। आत्मविजय ही सभी विजयोंका आधार है।

भारतीय संस्कृति उत्सवको साधना और साधनाको जीवनकी श्रेष्ठतासे जोड़ती है। विजयादशमी इसी परम्पराका जीवंत उदाहरण है। इस दिन शस्त्रपूजाकी जाती है, नये कार्योंका शुभारम्भ होता है और विजयकी कामनाके साथ जीवनमें आगे बढ़नेका संकल्प लिया जाता है। शस्त्रपूजाका वास्तविक अर्थ केवल अस्त्रोंकी आराधना नहीं, बल्कि शक्तिके प्रति श्रद्धा और उसके उत्तरदायी उपयोगका संकल्प है। आजके सन्दर्भमें हमारे शस्त्र ज्ञान, विवेक, शिक्षा, विज्ञान, श्रम, नैतिकता और सत्यनिष्ठा भी हैं। यदि इन शक्तियोंका उपयोग मानवताके कल्याणके लिए किया जाय तो वे राष्ट्रनिर्माणके प्रभावशाली साधन बन सकती हैं। दशहरा हमें अकर्मण्यतासे कर्मशीलता, निराशासे आशा और निष्क्रियतासे सृजनशीलताकी ओर बढ़नेकी प्रेरणा देता है। यह दिन अपने अधूरे संकल्पोंको पूरा करने, नयी संभावनाओंके द्वार खोलने और जीवनको श्रेष्ठ दिशा देनेका अवसर है।

दशहरेका एक महत्वपूर्ण पक्ष प्रकृति, कृषि और लोकजीवनसे उसका संबंध भी है। भारतीय समाजमें यह पर्व फसल, समृद्धि, ऋतु-परिवर्तन और सामुदायिक उल्लासकी परम्पराओंसे जुड़ा रहा है। शमी वृक्षकी पूजा, उसके पत्तोंका आदान-प्रदान और नये कार्योंका शुभारंभ प्रकृतिके प्रति श्रद्धा तथा मंगलकामनाकी भावनाको व्यक्त करते हैं। कृषि प्रधान भारतमें फसलकी समृद्धि केवल आर्थिक उपलब्धि नहीं, बल्कि धरती, किसान और प्रकृतिके परस्पर सहयोगका उत्सव भी है। यह परम्परा हमें याद दिलाती है कि मनुष्यकी प्रगति प्रकृतिसे अलग होकर संभव नहीं है। जिस संस्कृतिने वृक्षों, नदियों, पर्वतों और धरतीमें पवित्रताका अनुभव किया, उसकी उत्सवधर्मितामें पर्यावरण संरक्षण और सह-अस्तित्वकी प्रेरणा भी अंतर्निहित है। आज जब पर्यावरणीय संकट मानवताके सामने गम्भीर चुनौती बन रहा है, तब दशहरा हमें प्रकृतिके प्रति अपनी जिम्मेदारियोंको पुन: समझनेका अवसर देता है।

विजयादशमी भारतीय संस्कृतिकी समन्वयकारी चेतना का भी उत्सव है। देशके अलग-अलग क्षेत्रोंमें इसे विविध रूपोंमें मनाया जाता है। कहीं रामलीला और रावण-दहन होता है, कहीं दुर्गापूजाके बाद मांकी विदाई, कहीं शस्त्रपूजा तो कहीं लोक-परम्पराओंके माध्यमसे विजयका उल्लास व्यक्त किया जाता है। इन विविधताओंके पीछे एक साझा सांस्कृतिक सूत्र है-सत्यके प्रति आस्था, धर्मके प्रति निष्ठा, शक्तिके प्रति सम्मान और जीवनमें मंगलकी कामना। आज दशहरेके सन्देशको अपने सामाजिक और राष्ट्रीय जीवनमें उतारना पहलेसे अधिक आवश्यक है। भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक विद्वेष, अनैतिक प्रतिस्पर्धा, छलपूर्ण व्यवहार और स्वार्थपरक राजनीति जैसी प्रवृत्तियां समाजकी नैतिक शक्तिको कमजोर करती हैं। इन बुराइयोंका अंत केवल भाषणों, नारों अथवा प्रतीकात्मक आयोजनोंसे नहीं हो सकता। इसके लिए व्यक्तिगत चरित्र, सामाजिक उत्तरदायित्व और संस्थागत ईमानदारीको मजबूत करना होगा। यदि हम अपने कार्यक्षेत्रमें प्रामाणिकता अपनायें, सार्वजनिक जीवनमें कर्तव्यनिष्ठ रहें, शिक्षा और चिकित्साको मानवीय संवेदनासे जोड़ें तथा समाजमें प्रेम और सद्भावको बढ़ावा दें तो यही दशहरेकी वास्तविक साधना होगी। राष्ट्रकी शक्ति केवल उसकी आर्थिक समृद्धि, सैन्य क्षमता अथवा तकनीकी उपलब्धियोंमें नहीं, बल्कि उसके नागरिकोंके चरित्र, नैतिकता, अनुशासन और परस्पर विश्वासमें भी निहित होती है।

दशहरा अंतत: बाहरी विजयसे अधिक आंतरिक जागरणका पर्व है। यह हमें अपने भीतर प्रकाशका दीप जलाने, निराशाओंके बीच आशा खोजने, कठिनाइयोंमें साहस बनाये रखने और जीवनको नवसृजनकी दिशा देनेका सन्देश देता है। आइये इस विजयादशमीपर हम केवल रावणका पुतला जलानेतक सीमित न रहें, बल्कि अपने भीतरके अहंकार, स्वार्थ, असत्य और दुर्बलताओंको समाप्त करनेका संकल्प लें। सत्यको अपना आधार, विवेकको अपना मार्गदर्शक, करुणाको अपना स्वभाव और कर्मको अपनी साधना बनायें। यही भारतीय संस्कृतिकी आध्यात्मिक विरासतका सम्मान है, यही उत्सवकी सार्थकता है और यही वह विजय है, जो व्यक्तिके जीवनको प्रकाशित करते हुए परिवारए समाज और राष्ट्रमें नयी चेतनाका संचार कर सकती है। क्योंकि सच्चा दशहरा तभी है, जब रावणका दहन मैदानमें ही नहीं, मनमें भी हो। विजयका उत्सव केवल आतिशबाजीमें नहीं, आचरण में दिखाई देय और प्रकाश केवल दीपोंमें नहीं, हमारे विचारों, संस्कारों तथा कर्मोंमें भी प्रकट हो।

दशहरेके असली अर्थको समझें

दशहरा नवरात उत्सवके बाद मनाया जाने वाला सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक त्योहार है। असत्यपर सत्यकी विजय और राक्षस प्रवृत्ति और संस्कृतिपर दैवीय प्रवृत्ति एवं संस्कृतिकी विजय जैसे तमाम संदर्भ इससे जुड़ते हैं।

❐ अखिलेश आर्येन्दु

दशहरा यानी विजयादशमी मानवका चरित्र उच्चता हासिल कराता है और नीचता भी। यह चरित्र ही है जिससे कुल, गोत्रादिको उच्च या निम्न बनाता है। चरित्रकी वजहसे ही रावण और उसका खानदान लाखों सालोंसे तिस्कार ही नहीं, बल्कि पुतला जलाकर उसके अत्यंत दागदार चरित्रको दुत्कारा जाता है। इन्द्रियोंका संयम कितना महत्वपूर्ण है इसका वर्णन रामायण और रामचरित मानस दोनों पुस्तकोंमें देखा जा सकता है। राम-लक्ष्मणके अलावा हनुमान, अंगद और सुग्रीव इसके उदाहरण हैं। वेदमें आया है-अकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा, यानी वे संसारमें ऐसे अद्भुत और महान् कार्य करते हैं जो सुननेमें अद्भुत मालूम पड़ते हैं। यह है उच्च चरित्रके वैभवका आदर्श है। दशहरा हमारे जिन्दगीका वह सबसे बेहतर एवं पुनीत अवसर प्रदान करता है जब हम अपनी अच्छी-खराब वृत्तियोंकी विवेचना ही नहीं करते, बल्कि सफलता और असफलतामें मानवीय सद्गुणोंका क्या महत्व है उनकी विवेचनाका भी अवसर होता। महज रावण कुलके वीरोंका पुतला जलाकर दशहरा मनानेका कोई मायने नहीं, बल्कि अपने परिवार, समाज और संस्कृतिके साथ-साथ स्वराष्ट्रके बारेमें चिन्तन एवं विमर्श भी हमें लगातार करनेका संकल्प लेना चाहिए। अपने जीवन, परिवार, समाज एवं राष्ट्रकी हालातको समझनेके लिए राजारामके चरित्र और रावणके चरित्रको देखना और यह समझना कि बड़ा-सा बड़ा साम्राज्यका प्रमुख यदि चरित्रवान नहीं है तो उसकी गति वैसी ही होती है जैसी दिग्विजयी रावण की। रावणकी लंकाको हनुमानने जला डाली, यह बहुत हैरतकी बात थी। योगदर्शनके मुताबिक सिद्धियां हासिल किया हुआ व्यक्ति वे सभी तरहके करिश्मे कर सकता है जो आम तौरपर असंभव लगता है। हनुमान सिद्ध थे उन्होंने अपनी सिद्धियोंके बलपर सोनेकी लंका फूंक डाली। यानी अलौकिक शक्तियोंकी महाशक्तिके आगे असंभव कुछ नहीं होता।

दशहराको हम त्यौहार या उत्सव कस रूपमें मनाते हैं। इसके पीछे छिपे हुए भाव, धर्म, व्यवहारए प्रेरणा और मूल्योंको समझना आवश्यक है। विश्व मानवताका कल्याण जिन मानवीय सद्गुणोंसे हो सकता है उसके निर्माता और संस्थापक श्रीराम हैं। श्रीरामका नाम आते ही मानवता, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, सदव्यवहार और आचार-विचारकी उत्तमता स्वमेव प्रकत हो जाती है। एक उच्च चरित्रका मानव कैसा होना चाहिए रामके जीवनमें देखा जा सकता है। आज जब देश-दुनियामें अन्याय, अनर्थ, हिंसा, शोषण, विश्वासघात और क्रूरताएं इंसानियतको लहू-लुहान कर रहीं हैं, भगवान रामका जीवन आदर्श इन्हें रोकनेका कार्य कर सकतीं हैं। भगवान रामका जीवन विश्वमें अनुपम, अद्भुत और मूल्यपरक है जिसकी कीर्ति आज भी विश्वमें कायम है। विश्व जानता है भगवान रामका चरित्र उच्च, आदर्श और प्रेरणा देने वाला है। जिसका गुणगान भारतमें ही नहीं, बल्कि भारतसे बाहर भी लेखकों, कवियों और इतिहासकारोंने अनेक लेख, कविताएं एवं किताबें लिखीं। इनमें कामिल बुल्के, वारात्रिकोव और हेनरी केलाग सहित सैकड़ों विदेशी विद्वान शामिल हैं, जिन्होंने राम कथाके प्रसंगमें राम-रावण-युद्धकी विवेचनाएं अत्यंत सुन्दर, गौरव-युक्त और वैदिक एवं राक्षस संस्कृतिपर व्यापक स्तरपर लिखा।

भारतीय संस्कृति सदासे मानव मूल्योंपर आधारित रही है। इनसे ही विश्वमें सनातनसे हमारी संस्कृतिका डंका बजता रहा है। इन मूल्योंके जो सबसे अधिक स्वीकार्यकर्ता हुए उन्हें भगवान या ईश्वरके रूपमें सम्मान दिया गया। इन्हीं मूल्योंके प्रतिप्रादक थे भगवान श्रीरामचन्द्र। रामका सारा जीवन संघर्षका पर्याय रहा, लेकिन कभी संघर्षोंकी वजहसे उन्होंने मानव मूल्यों यानी सद्गुणोंको नहीं छोड़ा। वहींपर रावणने सभी तरहके सद्गुणोंको छोड़ दिया और अमानवीय गुणोंको ही जिन्दगीका आधार बना लिया, जिससे वेदोंका ज्ञाता होते हुए भी सबके तिरस्कारकी वजह बना। राम-रावण युद्धकी वजह भी यही रहा। वैदिक संस्कृतिमें पग-पगपर मूल्योंकी वीथियाएं बनायी गयी हैं। वे वीथियाएं राम जैसे भगवत्ता प्राप्त यानी बारह कलाओंसे युक्त भगवान राम जैसे युग-पुरुषोंने बनायी थी। इसलिए राम आज भी जहां-जहां भी भारतीय संस्कृतिका वैभव यानी धन है वहां-वहां वे विराजमान हैं। क्योंकि संसारमें भले ही आज हिंसा चारों तरफ अपना दबदबा कायमकी हो, लेकिन अहिंसा, धर्म, प्रेम, धैर्य और न्याय हर किसीको चाहिए। राम मानव सभ्यता संस्कृतिके प्रेरक, आदर्श और नायक हैं। क्योंकि वे सबके लिए शुभ और शांतिके प्रेरक हैं। शुभ और अशुभ नामोंका स्मरण संत तुलसीदासकी दृष्टिमें जानना आवश्यक है। यह नाम और कर्मकी कैसी विलक्षणता है कि राम नामका ध्यानमें लाना शुभ और रावण नामका स्मरण अशुभ माना गया है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण है। हम राम नामका स्मरण करते ही यह धारणा बना लेते हैं कि राम नामके केवल जपसे कल्याण हो जाता है। राम हमारी चेतनके अंग हैं। सत्य जहां भी होता है वहां आदर्श और नीति दोनों भी रहते हैं। और ये सब सद्गुणोंसे ही हासिल हो सकते हैं और मानव संस्कृति महानायक राममें ये सभी सद्गुण मौजूद हैं। विदेशी विद्वान् भी कहते हैं- राम हमारे लिए इसलिए भी पूज्य हैं, क्योंकि वे सभी तरहके सद्गुणोंसे युक्त हैं। तुलसी दास भी। कहते हैं-धीर बीर रघुबीर प्रिय सुमिरि समीर कुमारु। अगम सुगम सब काज करु करतल सिद्धि विचारु॥ राम धीर, वीर, गम्भीर प्रकृति वाले हैं। रामसे अतिशय प्रेम करने सच्चा रामानुरागी कभी युग-धर्मसे प्रभावित नहीं होता है। क्योंकि रामका जीवन चरित्र युग-धर्मकी द्वंद्वात्मक विश्रृखलाओंसे पूरी तरह रहित है। संत तुलसी दासने लिखा है- काल धर्म नाहिं व्यापहिं ताही, रघुपति चरन प्रीति अति जाही। मानसमें युगानुरूप धर्मके चार चरणोंका वर्णन किया गया है। वे हैं, सत्य, दया, तप और दान। इन चार चरणोंकी व्याख्या मानस मर्मज्ञ अपनी सुविधानुसार करते हैं। लेकिन मेरा चिन्तन कहता है कि ये मानवको सम्पूर्णता दिलाने वाले मूल्य हैं जिसकी जरूरत हर युगमें जन-जनको होती है। रामराजमें ये चारों चरण मौजूद थे। इसलिए रामराजको स्वर्गका राज कहा जाता है जहां निवास करनेके लिए देवता भी आतुर रहते हैं। वहींपर लंका सोनेकी होकर भी बनी न रह सकी। कारण धर्मके चारों चरणोंमें वहां कोई चरण मौजूद नहीं था।

मानसकी ये पंक्तियां, प्रकट चारि पद धर्मके कलि महुं एक प्रधान। जेन केन बिधि दीन्हे दान करइ कल्यान। वैदिक संस्कृतिमें चार पुरुषार्थ बताये गये हैं और इनमें पहला पुरुषार्थ धर्म है। राम उन असंख्य मानवोंमेंसे एक हैं, जिन्होंने धर्मका सम्यक् पालन किया। जिनका सारा जीवन ही धर्ममय है। मूल्य जिनके जीवनके आभूषण हैं। मानसकार कहते हैं-नर सहस्त्रमें सुनहु पुरारी, कोउ एक होइ धर्म व्रत धारी। मानव मनके आदर्श, मर्यादा, नियम और मूल्यसे आदर्शका निर्माण होता है और वह आदर्श रामकी जिन्दगीमें पग-पगपर देखा जा सकता है। दशहरा भारतीय समाजका ऐसा त्यौहार है जिसमें असत्यकी पराजय, दुष्ट प्रवृत्तियोंका पराभव और अहंकारका नाश होता है। मूल बात यह है कि अधर्म जहां भी दिखे उसके खात्मेके लिए बिना देर किये हर किसीको लग जाना चाहिए-रामने यही किया। राम सभी मूल्योंके उदगाता हैं इसलिए वह परमेश्वर हैं। मूल्योंसे रहित कोई भी व्यवहार, सम्बन्ध, भाव और मर्यादा निर्मित नहीं हो सकते हैं। दशहराके अवसरपर हम रावण परिवारके पुतलोंका ही दहन न करें, बल्कि रावणी प्रवृतियोंके खात्मेका संकल्प लें। तभी दशहरा मनानेका मकसद पूरा हो सकता है।

आत्मबोध

कुल्लू दशहरा

❐ भवान सिंह

हिमाचल प्रदेशकी सुरम्य वादियोंमें बसा कुल्लू केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरताके लिए ही नहीं, बल्कि अपनी अनूठी सांस्कृतिक धरोहरके लिए भी दुनियाभरमें प्रसिद्ध है। अंतरराष्ट्रीय कुल्लू दशहराकी विश्वमें पहचान है। जब बाकी जगहोंपर दशहरा खत्म होता है तो कुल्लूमें रघुनाथ जीकी रथयात्राके साथ कुल्लूका दशहरा शुरू होता है। इसमें कुल्लू घाटीके दूरदराज क्षेत्रोंसे आये देवी-देवता रघुनाथ जीकी रथयात्रामें शामिल होते हैं। पूरी वादीमें ढोल-नगाड़े और श्रीराम जीकी जय जयकारके उद्घोष सुनाई देते हैं। बड़ा जनसैलाब रघुनाथ जीकी रथयात्रामें शामिल होता है। कुल्लू दशहरामें आने वाले सभी देवी-देवता ढालपुर मैदान और आसपासके चिह्नित स्थानोंपर अस्थायी शिविरोंमें ठहराते हैं। सात दिनतक चलने वाले इस दशहरा उत्सवके दौरान भगवान रघुनाथ भी ढालपुरमें अस्थायी शिविरमें रहकर उत्सवको सुशोभित करते हैं। दशहरा मनाते हुए हमें इस महत्वपूर्ण तथ्यका बोध अवश्य होता है। हिमाचल प्रदेशके कुल्लू जिलामें मनाया जाने वाला दशहरा उत्सव न सिर्फ देशमें, बल्कि विदेशोंमें भी ख्याति प्राप्त है। कुल्लूका दशहरा सबसे अलग और अनोखे अन्दाजमें मनाया जाता है। यहां इस त्योहारको दशमी कहते हैं। आश्विन महीनेकी दशवीं तारीखको इसकी शुरुआत होती है। जब पूरे भारतमें विजयादशमीकी समाप्ति होती है, उस दिनसे कुल्लू घाटीमें इस उत्सवका रंग और भी अधिक बढ़ने लगता है। कुल्लू दशहराके लिए ३६९ साल पहले राजा जगत सिंहने देवताओंको बुलानेके लिए न्योता देनेकी परम्परा शुरू की थी, जो आज भी चली आ रही है। बिना न्योतेके देवता अपने मूल स्थानसे कदम नहीं उठाते। न्योतेपर करीब २०० किमी. तक पैदल यात्रा कर नदियों, जंगलों, पहाड़ोंसे होते हुए अट्ठारह करड़ूकी सोह ढालपुर पहुंचते हैं। सात दिनोंमें एक जगहपर तीन सौसे अधिक देवी-देवताओंके दर्शनके लिए लाखोंकी संख्यामें लोग, देशी-विदेशी पर्यटक, शोधार्थी हाजिरी भरते हैं। देवी हिडिंबाके बिना रघुनाथ जीकी रथयात्रा नहीं निकाली जाती है। दशहरेके आरंभमें सर्वप्रथम राजाओंके वंशजों द्वारा देवी हिडिंबाकी पूजा-अर्चना की जाती है तथा राजमहलसे रघुनाथ जीकी सवारी रथ मैदान ढालपुरकी ओर निकल पड़ती है। राजमहलसे रथ मैदानतककी शोभा यात्राका दृश्य अनुपम एवं मनमोहक होता है। इस स्थानपर जिलेके विभिन्न भागोंसे आये देवी-देवता एकत्रित होते हैं। दशहरेके छठे दिन सभी देवी-देवता रघुनाथ जीके शिविरमें शीश नवाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। देवी-देवताओंकी पालकियोंके साथ ग्रामवासी वाद्य यंत्र बजाते हुए चलते हैं। ब्यास नदीके तटपर एकत्रित घास एवं लकड़ियोंको आग लगानेके पश्चात पांच बलियां दी जाती हैं तथा रथको पुन: खींचकर रथ मैदानतक लाया जाता है। इसीके साथ लंका दहनकी समाप्ति हो जाती है तथा रघुनाथ जीकी पालकीको वापस मंदिर लाया जाता है। देवी-देवता भी अपने-अपने गांवके लिए प्रस्थान करते हैं।

बुराइयां मिटानेसे ही सार्थक होगी विजयादशमी

❐ योगेश कुमार गोयल

धार्मिक मान्यताओंके अनुसार विजयादशमी वह दिन है, जब भगवान श्रीरामने लंकापति रावणका वध कर सत्य और धर्मकी विजय स्थापित की थी और जब आदि शक्ति दुर्गाने महिषासुर जैसे महाबलशाली असुरका संहार कर धरती और देवताओंको उसके अत्याचारोंसे मुक्त किया था। यही कारण है कि इसे बुराईपर अच्छाईकी जीतका पर्व कहा जाता है। दशहरा शब्द स्वयं अपने भीतर गहन प्रतीकवाद समेटे हुए है। 'दश' का अर्थ है दस और 'हरा' का अर्थ है हर लेना, नष्ट करना या दूर करना। इस दृष्टिसे दशहराका अर्थ हुआ, मनुष्यके भीतर मौजूद दस प्रमुख अवगुणों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, आलस्य, असत्य, अन्याय और हिंसाको नष्ट करनेका संकल्प लेना। विजयादशमीको इतिहासमें भी शुभारंभ और विजयके प्रतीक पर्वके रूपमें माना जाता रहा है। कई प्राचीन राजाओं और क्षत्रियोंने युद्ध या किसी विशेष अभियानपर निकलनेके लिए इसी दिनको चुना, क्योंकि यह दिन विजयके लिए प्रस्थानका प्रतीक है। भगवान श्रीराम द्वारा समुद्र तटपर शारदीय नवरात्रिकी पूजाका प्रारम्भ और उसके बाद लंकापर चढ़ाईका ऐतिहासिक प्रसंग भी इसी परम्परासे जुड़ा है। नवरात्र और विजयादशमीका गहरा संबंध है। नवरात्रके नौ दिन शक्तिकी उपासनाके लिए माने जाते हैं। देवीके नौ रूपोंकी पूजाके माध्यमसे भक्त अपने भीतर शक्ति और साहसका संचार करते हैं और दसवें दिन यानी दशमीको विजयका प्रतीक मानते हैं। नवरात्रके दौरान शक्तिकी उपासनाका एक व्यापक सामाजिक और दार्शनिक महत्व है। यह समाजमें स्त्री शक्तिके प्रति सम्मान और आदरका संदेश है। दशहरेका वास्तविक संदेश तभी साकार होगा, जब हम समाजमें प्रत्येक नारीको गरिमा, शिक्षा, स्वतंत्रता और सम्मानका अधिकार देंगे। दशहरेका सांस्कृतिक और सामाजिक स्वरूप भी अत्यन्त जीवंत है। उत्तर भारतमें इस दिन रावण, मेघनाद और कुम्भकर्णके विशाल पुतले बनाये जाते हैं और शामको उनका दहन किया जाता है। हजारों लोग एकत्रित होकर इस आयोजनको देखते हैं और आतिशबाजीके बीच रावणके पुतलेके जलनेका दृश्य सामूहिक रूपसे बुराईपर अच्छाईकी जीतका प्रतीक बन जाता है। यह दृश्य न केवल धार्मिक भावनाओंसे जुड़ा है, बल्कि सामुदायिक एकता और लोक परम्पराओंका भी अद्भुत उदाहरण है। बंगाल और पूर्वी भारतमें दुर्गा पूजाका भव्य आयोजन इसी कालमें सम्पन्न होता है। दुर्गा प्रतिमाओंकी स्थापना, पूजा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और फिर विसर्जन, ये सब इस पर्वके सामाजिक और सांस्कृतिक आयामको और समृद्ध करते हैं। यह पर्व भारतीय संस्कृतिकी विविधतामें एकताका सशक्त प्रतीक है। लोकमान्यताओं और ग्रामीण परम्पराओंमें तो दशहरेका विशेष स्थान है। कई क्षेत्रोंमें दशहरेके दिन घरों और खेतोंमें बोये गये जौको काटकर 'ज्वारे' के रूपमें पूजा जाता है। इन्हें स्त्रीके गर्भ और उसकी संतानका प्रतीक माना जाता है। बहनें अपने भाइयोंके सिरपर ज्वारे रखती हैं और भाई बहनोंको उपहार देते हैं। यह परम्परा भाई-बहनके पवित्र संबंधको और अधिक मजबूत करनेका संदेश देती है। इस पर्वमें पारिवारिक, सामाजिक और भावनात्मक संबंधोंकी यह गहराई भारतीय जीवन मूल्योंकी विशेषता है।

पौराणिक दृष्टिसे देखें तो दशहरा केवल रावण-वधतक सीमित नहीं है। महिषासुर मर्दिनीकी कथा भी इसी दिनसे जुड़ी है। जब महिषासुरके आतंकसे देवता और मनुष्य सभी पीड़ित हो उठे थे, तब देवी दुर्गाने नौ दिनोंतक उससे युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया। यह घटना शक्ति और साहसके महत्वको उजागर करती है। यह बताती है कि जब बुराई और अन्याय अपने चरमपर पहुंच जाते हैं, तब शक्तिका स्वरूप धारण कर ही उनका अंत किया जा सकता है। महिषासुर वधकी कथा स्त्री शक्तिकी सर्वोच्च अभिव्यक्ति है, जो हमें सिखाती है कि प्रत्येक व्यक्तिमें यह शक्ति निहित है कि वह अन्याय और अत्याचारका सामना कर सके। दशहरेका वास्तविक महत्व आत्मचिंतन और आत्मसुधारमें निहित है। यह पर्व केवल रावणके पुतले जलानेका उत्सव नहीं है, बल्कि हमें यह सोचनेपर विवश करता है कि हमारे भीतर कौन-कौनसे रावण अब भी जीवित हैं। अहंकार, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ, असत्य, ये सब रावणके ही विभिन्न रूप हैं। यदि हम हर दशहरेपर यह संकल्प लें कि कमसे कम अपनी एक बुराईको समाप्त करेंगे तो धीरे-धीरे हम अपने भीतरके रावणका अंत कर पायंगे। यही इस पर्वकी सच्ची साधना और सार्थकता है।

आजके समयमें जब समाजमें हिंसा, असमानता, भ्रष्टाचार, शोषण और अन्याय जैसी समस्याएं व्याप्त हैं, तब दशहरेका महत्व और बढ़ जाता है। यह पर्व हमें प्रेरित करता है कि हम सामूहिक रूपसे भी इन बुराईयोंके विरुद्ध खड़े हों। जिस प्रकार भगवान रामने रावणका अंत कर धर्म और सत्यकी स्थापना की, उसी प्रकार हमें भी अन्याय और भ्रष्टाचारके विरुद्ध संघर्ष करना होगा। जिस प्रकार माता दुर्गाने महिषासुरका वध किया, उसी प्रकार समाजकी स्त्रियोंको भी अपने अधिकारों और गरिमाकी रक्षाके लिए सशक्त और आत्मनिर्भर बनना होगा। दशहरा राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक अखंडताका प्रतीक है। भारत जैसे विशाल और विविधताओंसे भरे देशमें यह पर्व हमें जोड़ता है। चाहे उत्तरमें रामलीला और रावण-दहनकी परम्परा हो या पूर्वमें दुर्गा पूजा, पश्चिममें शस्त्र-पूजन हो या दक्षिणमें देवी विजयादशमी उत्सव, सबका उद्देश्य एक ही है, बुराईपर अच्छाईकी जीतका संदेश देना। यह पर्व हमें अहसास कराता है कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर कितनी समृद्ध है और हमारी परम्पराएं किस प्रकार हमें एक सूत्रमें बांधती हैं। दशहरेका सबसे बड़ा संदेश यही है कि धर्म, सत्य, न्याय और करुणाकी विजय निश्चित है। चाहे बुराई कितनी भी शक्तिशाली क्यों न लगे, अंतत: अच्छाई ही विजयी होती है। यह पर्व हमें केवल उत्सवका आनन्द लेनेके लिए नहीं, बल्कि अपने जीवनको संवारने और समाजको बेहतर बनानेकी दिशामें कदम बढ़ानेके लिए प्रेरित करता है। सही मायनोंमें विजयादशमीका उत्सव तभी सार्थक है, जब हम अपने भीतरके रावणका वध कर सकें और अपने जीवनमें अच्छाई, सत्य और प्रेमको स्थान दे सकें। यही इस पर्वका वास्तविक और शाश्वत संदेश है, जो इसे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राष्ट्रीय एकताका पर्व बनाता है।